एक भारतीय आत्मा का क्रांतिपथ

शोधपत्र-हिन्दी

* डॉ. अनिता सोनी ** रमेश कुमार गोहे

''माखनलाल चतुर्वेदी को क्रान्तिकारियों में गिनना उनकी साहित्यिक छवि को धूमिल करना नहीं है, बल्कि उनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाना ही है। भले ही साहित्यिक मूल्यांकन मे राष्ट्रवाद के सशक्त पक्षधर और राष्ट्रप्रेम के अग्रणी के रूप में समीक्षाकारों एवं आलोचकों ने माखनलाल चतुर्वेदी का मूल्यांकन न किया हो किन्तु क्रान्तिकारी गतिविधियों के रूप को उनके कर्मक्षेत्र से निकाला नही जा सकता । माखनलाल के जीवन का मूल्यांकन क्रान्तिकारी के रूप में किये बिना उनकी राष्ट्रवादी ,मानवतावादी और स्वछन्द विचार कविताओं की विचारधारा को स्थापित नही किया जा सकता।''

गांधीजी के प्रभाव के कारण आंदोलन दो भागों में बट चूका था । एक नरमदल और दूसरा गरम दल। चतुर्वेदीजी ने 16वर्ष की उम्र में ही क्रांतिकारी दल में भर्ती हो स्वाधीनता प्राप्त करने की कसम खाँ ली थी। डॉ. प्रभाकर माचवे ने आपके बारे में लिखा है–''माखनलाल चतुर्वेदी ने काशी के दशाश्वमेद्य घाट के पास गंगा की धारा में खड़े होकर सन् 1906 में, बड़े महाराष्ट्रीय क्रांतिकारी सखाराम गणेश देऊसकर से दीक्षा ली । क्रांति की । अपने रक्त से प्रतिज्ञा–पत्र पर हस्ताक्षर किए। पिस्तौल चलाना सीखा ।'' इस तरह माखनलाल जी की क्रांतियात्रा शुरू हुई । क्रांतियात्रा के समय उन्होने जिस भाव को अपना आदर्श बनाया वह कुछ इस तरह से है देखिए उसकी कुछ पंक्तियां–

जब लियो फकीरी बाना
मांग क्यों खाना टूकडे हराम के ।
तू फांके पर हरदम रहना
भूख प्यास ,सुख दुःख सब सहना
प्राण गये तो कभी ना कहना
हम गुलाम है दाम के ।
तू रियाज कर ऐसा भाई
नाम खूदा है अटल कमाई
बचो बुरे से करो कमाई
बनकर बन्दे राम के ।

प्रभाकर माचवे जी का एक कथन अत्यन्त महत्वपूर्ण है जो आपने माखनलाल चतुर्वेदी जी के सन्दर्भ में लिखा है ''1906 की कलकत्ता कांग्रेस में वे गये और लोकमान्य तिलक के दर्शन किये । तरूणो की टोली के साथ तिलक की रक्षा करते हुए ये लोग इलाहाबाद पंहुचे । वहां कायस्थ के एक मकान के अहाते में यह भाषण कराया गया । तीन हजार लोग सुनने के लिए आये। यह उनका बचपन में क्रांतिकारियों से हुआ पहला सम्पर्क था।'' शायद इस घटना के बाद देश की आवश्यकता को देखकर माखनलाल जी के मन में क्रांतिकारी बनने का विचार द्वढ़ हुआ हो। कृष्ण देव शर्मा ने चतुर्वेदी जी की जीवन झांकी में लिखा है कि ''माखनलाल चतुर्वेदी का क्रांतिकारी दल से परिचय सन् 1906 में असित गांगुली और फणीन्द्रमजुमदार से स्थापित हुआ । इन्होने इनकी सदस्य संख्या 19 थी इन्होने सन् 1916 तक क्रांतिकारी दल में सक्रीय कार्य किया ।'''

'''प॰ चतुर्वेदी की इन क्रांतिकारी घटनाओं की गतिविधियों के बारे में अभी तक किसी को कोई भनक नही मिल पाई थी, किन्तु जब माखनलाल से नये–नये तरूणो का टिमरनी, मसनगाँव या छिन्दगांव आदि स्थानो पर उनकी अनुपस्थिति में अचानक मिलने आ जाने से ग्रामवासियो के लिए कौतुहल और संदेह का विषय बनता जा रहा था। माखनलाल अपने दल की गतिविधियो से सम्पर्क बनाने हेतु काशी से निरन्तर जुड़े रहते थे । एक बार उन्हे गुप्त सूचना मिलि कि उन्हे काशी जाना है तो वे कोई ना कोई कारण विद्यालय से जाने का ढूंढ रहे थे । अतः जब स्कूल की छुट्टीयां हुई तो ये नादनेर या बाबई जाने का बहाना कर सीधे माता –पिता से बिना बोले काशी के लिए रवाना हो गये । उन्ही के शब्दो मे ''बाबई'' जाने के स्थान पर मै सीधे काशी गया और एक दिन की मीटिंग लेकर सीधा ''बाबई'' पहुंचा । लेकिन बाबई से जानबुझ कर खाली हाथ लौट आया । पिताजी को और मां को इस बात की कोई खबर नहीं थी किंन्तु जैसे–जैसे तरूणो का आना जाना मेरे पास अधिक होने लगा एक दिन ऐसे ही दो तरूण मुझे टिमरनी में न पाकर मसनगांव आये। पिताजी को वे जरा अजनबी लगे यह पहला ही मौका ही था ऐसे तरूणों का

* शोध निर्देशक, अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र ज. हा. शास. स्ना. महाविद्यालय, बैतूल
** शोधार्थी, अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र ज. हा. शास. स्ना. महाविद्यालय, बैतूल

सामना पिताजी से हुआ था। उन्होने भोजन तो दोनो को करा दिया, किन्तु मुझे आज्ञा दी कि मै उन्हे तुरन्त ही रवाना कर दूँ। मैं उन्हे स्टेशन छोड़ने गया तब तक माता पिता की क्या चर्चा हुई कि लौटकर मुझे खूब डाँट पड़ी, पत्नि को पता चला तो वह भी दिन भर रोती रही।''

क्रान्तिकारी दल की जो प्रतिज्ञाएं थी उनमें प्रमुख थी अंग्रेजों को देश से भगाना । उक्त घटना के बाद पं. चतुर्वेदी जी ने अपने कार्यो को दूसरे ढंग से करने का प्रयास किया। वे क्रान्तिकारी कर्तव्य के प्रति निष्ठा पूर्वक समर्पित थे। चाहे अपने प्राणों की बलि ही क्यों ना देना पड़े। वे इसके लिए भी तैयार थे। वे क्रान्तिकारी कार्यो का प्रशिक्षण कलकत्ता में छः माह का ले चुके थे। माखनलाल ने उक्त छः माह के प्रशिक्षण की शर्तो को धीर–धीरे अपने जीवन में ढाल लिया और हम उक्त प्रशिक्षण के संकल्पो और दल के कठोरतम नियमों का पालन करने का ही परिणाम चतुर्वेदी के जीवन में देखते है। जब तक देश स्वतन्त्र नही हुआ तब तक क्रान्तिकारी दल की गतिविधियां बराबर चलती रही और माखनलालजी इनसे जुड़कर कार्य करते रहे। इससे स्पष्ट है कि चतुर्वेदी जी ने क्रान्तिकारीदल की शिक्षा को आत्मसात कर लिया था और उसके नियमानुसार अडिग होकर कार्यो को अंजाम देते रहे । अपने कार्यो में कभी भी हड़बड़ाहट या विचलन की स्थिति उत्पन्न ना होने दी। क्रान्तिकारी जीवन में कई उतार चढ़ाव आते रहे । कई भेष धारण करते रहे। जीवन क्रमिक गति से चलता रहा एवं कई बार पुलिस से बचकर भागना भी पडा । पुलिस के उनके राष्ट्रीय स्तर का क्रान्तिकारी होने की सूचना भी पहुंच चूकी थी। ''1912 में उन्हे 'शक्तिपूजा' निबंध लिखने पर राजदोह का आरोप लगा, और उन्होने अध्यापकी से त्याग पत्र दे दिया । 1913 में प्रभा मासिक का सम्पादन सम्भाला और निडरता से निर्भिकता से इसमें कविताएं और सम्पादकीय लिखते रहे। उनकी क्रान्तिकारी मानसिकता अब यदि शारीरिक हलचल सेना नही दिखाई देती तो पत्रकरिता के माध्यम से आप क्रान्ति रचनाएं पाठको को दे रहे थे । क्रान्तिकारी और यशस्वी पत्रकार गणेश शंकर विद्यार्थी से 1914 में कानपुर में आपकी भेट हुई । समान विचारों के दो महान क्रान्तिकारी और पत्रकारों की भेंट अत्यन्त सहयोगी सिद्ध हुई।''

''यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि 1920 से आपने गांधीजी के साथ मिलकर 1920–1923 तथा 1931 में जेल यात्राएं की किन्तु इसके पूर्व क्रांतिकारी दल में रहते हुए भी नौ बार जेल गये इस प्रकार चतुर्वेदी जी 12 बार जेल गये और 63 बार उनकी बाद में ठाकुर बख्तावर सिंह के परिवार की पेन्सन रूक गई जो बुरी बात हुई ।'' ''तत्काल ही नर्मदा की सीमा पर बख्तावर सिंह के गाँवों में रहने वाले बहुत से तरूणों को अन्यत्र भिजवाना पड़ा और कुछ अण्डरग्राउण्ड खण्डवा, बुरहानपूर और उसके आसपास रखना पड़ा।''

हरिकृष्ण प्रेमी ने चतुर्वेदी जी के बारे में लिखा है कि ''इनका राजनीतिक जीवन यद्यपि क्रांतिकारी दल के सदस्य के रूप में प्रारंभ हुआ था फिर भी गाँधी जी के राजनीतिक क्षेत्र में आने के पश्चात ही इन्होने अंहिसा की वीरता को समझा।'' फिर भी अपनी वाणी लेखनी और कविता की क्रान्ति ज्वाला से तरूणो का खून खौलाते रहे। फिर चाहे पिस्तौल न चलाई हो किन्तु कलम की शक्ति से शासन की चूले हिलाने में आप कदापि पीछे नही रहे। माचवे जी ने उनके बारे में लिखा है कि ''वे अपने सिद्धान्तो के लिए आदर्श के लिए, देश के लिए सबसे बड़े त्याग की मांग करते है।

इस तरह उनके जीवन में कई रंग देखने को मिलते है । पहले तो वे गुप्त रूप से क्रांतिकारी गतिविधियो में भाग लेते रहे किन्तु बाद में पता चल जाने के बाद खुले रूप से भाग लेने लगे एवं कई बार जेल भी गये । आपने अपने क्रान्तिकारी स्वरूप को परिवर्तित करके बाद में पत्र पत्रिकाओं एवं कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जो तरूणो में क्रान्ति का भाव पैदा करने का महत्वपूर्ण कार्य करते थे । जिनको पढ़ने सें तरूणो में देश भक्ति एवं देशप्रेम भावना का उदय हुआ था। प० चतुर्वेदी जी कलम प्रभा में राष्ट्र प्रेम के भाव को लेकर जन्मी और उसने देशवासियों से कहा–

यह रत्न गर्भा भूमि देखो/हो रही है रंक।/प्रिय सोच लो तुम दुत मिटा दो/यह महान कलंक ।। प्रभा–1

और आपने जो बात युवा योद्धाओ के लिए कही उनके आह्वान के रूप में कही जिसके एक–एक शब्द से देश प्रेम की सुगन्ध आती है–

रण भूमि को तो देखिए/ये वीर कैसे डट रहे।/कर आत्म त्याग स्वदेश के/हित, खेत बनकर कट रहे।

स्वाधीनता संग्राम के साथ–साथ माखनलाल चतुर्वेदी ने अपने आपको राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत हो बलिदान भावना को साकार रूप देकर कहा–

सूली का पथ ही सीखा हूँ/सुविधा सदा बचाता आया।/बलि पथ का अंगारा हूँ/जीवन ज्वाल जलाता आया।

अंग्रेजी प्रशासन के अत्याचार पर भारतीय जनता का

जो आक्रोश पनप रहा था उसको आपने काव्य में इस प्रकार व्यक्त किया ।

हूँ मोट खीचता लगा पेट पर जुआ/खाली करता हूँ ब्रिटिश राज का कुंआ।

अपनी विद्रोह कविता में उन्होने लिखा है

विद्रोह है हमी हमारे फूलों में फल आते।/और हमारी कुबार्नी पर जड़ भी जीवन लाते।

पं॰ बनारसीदास चतुर्वेदी ने अपने एक संस्मरण में लिखा है –महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन प्रारंभ होने पर माखनलाल जी ने क्रान्तिकारी कार्य पद्धति को तिलांजलि दे दी पर अमर शहीद गणेश शंकर जी की तरह के क्रान्तिकारी को आश्रय बराबर देते रहे ।

आपकी एक कविता का भाव देखिए ।

द्वार बलि का खोल, चल भूडोल कर दे/एक हिमगिरि एक सिर का मोल कर दे/चढ़ा दे स्वातन्त्र्य प्रभु पर अमर पानी/विश्वमाने तु जवानी है, जवानी।

साम्प्रदायिक सद्भावना एवं राष्ट्रीय एकता और अखण्डता धार्मिक अखण्डता का मंत्र आपके काव्य में द्रष्टिगोचर होता है देखिए–

हो मुकुट हिमालय पहनाता, सागर जिसके पग धुलवाता,/यह बंधा बेड़ियों में, मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारा मेरा है।

एक अन्य काव्य देखिए

2. राष्ट्रवादी चिन्तक माखनलाल चतुर्वेदी गोपीनाथ कालभोर, केदारनाथ एण्ड सन्स, मथुरा 2007/केरल से कश्मीर तलक हम है हम भाई–भाई है/ कावेरी ,कृष्णा कि नर्मदा, गंगा, यमुना, सिन्धु रहे,/हमे न तोड़ सकेगा कोई हम माँ जाये बंधु रहे/चरण–चरण करोड कि उनका अमित उचित अभिमान लिए ।।

वीरों के कदमों तले बिछ जाने की उत्कंठा लिए पुष्प की अभिलाषा में कवि ने पुष्प के क्या भाव किये है –

चाह नही मैं सुरबाला के गहनों में गुथा जाऊं।/चाह नही देवों के सर पर चंढू भाग्य पर इठलाऊं।।/मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक।/मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जाये वीर अनेक।।

स्वतन्त्रता की चाह रखने वाले इस कवि ने महात्मा गांधी के । दक्षिण आफ्रिका संग्राम पर एक विरल प्रश्नोत्तर द्रष्टि से निःशस्त्र सैनानी कविता लिखी जो इस प्रकार है–

प्यार? उन हथकड़ियों से और कृष्ण के जन्म स्थल से प्यार।/हार ? कंधो पर चुभती हुई अनोखी जंजीर है हार!/भार ? कुछ नही रहा शेष अखिल जगती तल का उद्धार!/द्वार ? उस बड़े भवन का द्वार , विश्व की परम मुक्ति का द्वार।/पूज्यतम कर्म भूमि स्वच्छन्द मची है डट पडने की धूम। /दहलता नभ मंडल ब्रहाण्ड, मुक्ति के फट पडने की धूम ।।

इस तरह अनेक तरह के काव्य के माध्यम से भी माखनलाल चतुर्वेदी की लेखनी एवं उनका जीवन क्रान्ति पथ पर बढ़ते रहा। राष्ट्रीय भावना का काव्य आप जनमानस तक हमेशा पहुचाते रहे।

माथे की हिन्दी बिन्दी को/चलो गोरखली में बोले।/वीरों को निर्वीर्य बनाया/चलो आज पातक यह धोले।

समुची धरती पर मानवता एक श्रेष्ठ एवं ईश्वरीय कृत महत्वपूर्ण रचना है जिसकी अखण्डता ,एकता ,सद्भावना, पर ध्यान दिया जाना चाहिए। मानवता को बनाये रखने के लिए अंहिसा, शान्ति, धार्मिक सद्भाव को जन्म देकर युद्धो को सद्भावना के बल से रोकना चाहिए । आज हमें उसे संजोकर रखना चाहिए। इसी भावना से हमारे देश का विकास एवं कल्याण संभव है। ''धरती का कण–कण राष्ट्रीय स्वाभिमान से चमक उठता है तब प्रकृति को भी मानव के स्वर के साथ गाने को कवि प्रेरित करता है ।''

अणु से कहो अमर है निर्भय/बोल मुर्खा मानवता की जय।।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 राष्ट्रवादी चिंतक माखनलाल चतुर्वेदी (गोपीनाथ कालभोर पृष्ठ 30)केदारनाथ एंड संस मथुरा 2007 2. माखनलाल चतुर्वेदी (प्रभाकर माचवे पृष्ठ 23) राजपाल प्रकाशन दिल्ली 1988 3 माखनलाल चतुर्वेदी (प्रभाकर माचवे पृष्ठ 13)राजपाल प्रकाशन दिल्ली 19884 चतुर्वेदी जी की जीवन झांकी माखनलाल चतुर्वेदी यात्रा पुरूष (कृष्ण देव शर्मा पृष्ठ 15–16) नेश्नल प्रकाशन दिल्ली 1969 5 राष्ट्रवादी चिंतक माखनलाल चतुर्वेदी (गोपीनाथ कालभोर) केदारनाथ एंड संस मथुरा 2007 6 माखनलाल चतुर्वेदी (प्रभाकर माचवे पृष्ठ 14)राजपाल प्रकाशन दिल्ली 1988 7 राष्ट्रवादी चिंतक माखनलाल चतुर्वेदी (गोपीनाथ कालभोर) केदारनाथ एंड संस मथुरा 2007 8 राष्ट्रवादी चिंतक माखनलाल चतुर्वेदी (गोपीनाथ कालभोर)केदारनाथ एंड संस मथुरा 2007 9 माखनलाल चतुर्वेदी एक अध्ययन (पदूमलाल पुन्नालाल बख्शी पृष्ठ 5) 10 माखनलाल चतुर्वेदी (प्रभाकर माचवे पृष्ठ 82) राजपाल प्रकाशन दिल्ली 1988 11 कवि वक्ता और देश भक्त माखनलाल चतुर्वेदी यात्रा पुरूष (रामधारी सिंह दिनकर पृष्ठ 132) सम्पादक श्री कांत जोशी नेश्नल प्रकाशन नई दिल्ली 12 राष्ट्रवादी चिंतक माखनलाल चतुर्वेदी (गोपीनाथ कालभोर) केदारनाथ एंड संस मथुरा 2007